दुर्लभ है, जिसकी कृष्णभावनामृत में रुचि हो। प्रधान रूप में इन्द्रियतृप्ति में अनुरक्त होने से जनसाधारण किसी शक्तिशाली जीव की ही उपासना करता है।

चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः।
तस्य कर्तारमपि मां विद्ध्यकर्तारमव्ययम्।।१३।।

चातुर्वर्ण्यम्=मानव समाज के चार वर्ण; **मया**=मेरे द्वारा; **सृष्टम्**=रचे गए हैं; **गुणकर्मविभागशः**=गुण और कर्म के अनुसार; **तस्य**=उसका; **कर्तारम्**=करने वाला (होने पर); **अपि**=भी; **माम्**=मुझे; **विद्धि**=(तू) जान; **अकर्तारम्**=अकर्ता; **अव्ययम्**=अविनाशी को।

अनुवाद

प्रकृति के त्रिगुणों और नियत कर्म के अनुसार चारों वर्ण मेरे द्वारा रचे गये हैं; परन्तु इस व्यवस्था का कर्ता होने पर भी मुझ अविनाशी को तू अकर्ता ही जान।।१३।।

तात्पर्य

श्रीभगवान् सम्पूर्ण सृष्टि के रचयिता हैं, सब कुछ उनसे उत्पन्न है, उन्हीं के द्वारा प्रतिपालित है तथा विनाश होने पर उन्हीं के आश्रय में रहता है। स्पष्टतः वे ही वर्णाश्रम व्यवस्था के प्रणेता हैं। वर्णाश्रम धर्म में सर्वप्रथम बुद्धिवादियों का वर्ग है, जो सत्त्वगुणी होने के कारण ब्राह्मण कहलाते हैं। द्वितीय, प्रशासनिक वर्ग में रजोगुणी क्षत्रिय आते हैं। वैश्यों में रजोगुण तथा तमोगुण का मिश्रण रहता है तथा शूद्र प्रकृति के तमोगुण में स्थित हैं। मानव समाज में चतुर्वर्ण की सृष्टि करने पर भी भगवान् श्रीकृष्ण इन सबसे अतीत हैं, क्योंकि वे उन बद्धजीवों के समान नहीं हैं जिनका एक अंश मानव समाज के रूप में है। मानव समाज बहुत सी दृष्टियों से पशु-समाज के सदृश है। अतः पशु स्तर से मनुष्य का उत्थान करने के लिए श्रीभगवान् ने उपरोक्त वर्णाश्रम की रचना की। इस पद्धति के द्वारा शनैः-शनैः कृष्णभावना उद्भावित हो जाती है। कर्म में मनुष्य की प्रवृत्ति त्रिगुणों के उस अनुपात के अनुसार होती है, जिससे वह युक्त है। गुणों पर आधारित जीवन के उन लक्षणों का वर्णन इस ग्रन्थ के अठारहवें अध्याय में है। परन्तु कृष्णभावनाभावित पुरुष की कोटि ब्राह्मण से भी उत्तम है। गुणों के अनुसार ब्राह्मण को परतत्त्व का ज्ञाता होना चाहिए; परन्तु अधिकांश ब्राह्मण श्रीकृष्ण के निर्विशेष ब्रह्मस्वरूप को ही प्राप्त कर पाते हैं। इसलिए जो पुरुष ब्राह्मण के सीमित ज्ञान का लंघन करके भगवान् श्रीकृष्ण को जान जाता है, वही कृष्णभावनाभावित होता है, अर्थात् वैष्णव पद पाता है। कृष्णभावनामृत में श्रीकृष्ण के राम, नृसिंह, वराह, आदि अंशों के ज्ञान का समावेश है। जिस प्रकार श्रीकृष्ण मानव समाज की इस वर्णाश्रम व्यवस्था से परे हैं, उसी प्रकार कृष्णभावनाभावित महापुरुष भी समाज, राष्ट्र, जाति, आदि जगत् के सब भेदों से अतीत हैं।